શ્રી શત્રુંજય – મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/o. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંઢા રોડ, ઔરંગાબાદ – ૪૩૧ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન પ્રવેશિકા

◆◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆◆

अभ्यास-१

એનરોલમેન્ટ નંબર हिन्दी

ગામ 2020-21

વિદ્યાર્થીનું નામ ____________

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા	પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં		
विरतिधर्म	(१) पंचमहाभूत	(५) दीपक	
अनंत	(२) प्रथमा	(६) धुन	
नव तत्त्व	(३) तिर्यंच	(७) बंध	
ऋषभ कुमार	(४) श्री-वीरप्रभु	(८) अपकाय	
निहार	(५) रत्नों की	(९) सुरमा	
अभयदान	(६) कुंडाडा	(१०) कमरे	
पावडर	(७) पुण्य	(११) जीवना	
कल्पवृक्ष	(८) हुरा	(१२) लोक में	
देव-गुरु	(९) तेउकाय	(१३) अज्ञानी	
पुलकित	(१०) अगुरुलघु	(१४) प्रतिहारी	
स्वाश्रयी	(११) सुरुपा	(१५) बयासी	
देशावर	(१२) रत्नपुरी	(१६) प्रवाल	
सिंहासन	(१३) निर्जरा	(१७) वेद	
पीत	(१४) भाव	(१८) वनस्पतिकाय	
जंबूद्वीप	(१५) अभिजित	(१९) नव तत्त्व	
राजा सिंहासन		(२०) खडी	
नमस्कार			
चैतन्य			
सून्न			
युगलिया			

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(१)	तेउकाय
(२)	चैतन्य
(३)	स्वरूपका
(४)	दीपककी लौका

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(१)	५	(६)	७
(२)	८	(७)	२
(३)	९	(८)	३
(४)	१०	(९)	४
(५)	१	(१०)	६

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

(१)	८
(२)	५७
(३)	१८
(४)	५०
(५)	१०८
(६)	१२८
(७)	५२५
(८)	३४
(९)	५
(१०)	२

	પ્રશ્ન-૬ ✓ કે ✗		પ્રશ્ન-૭ આ વાક્ય ક્યા પાને છે તે નંબર
(१)	✓	(१)	१६
(२)	✗	(२)	१०
(३)	✗	(३)	२२
(४)	✓	(४)	६
(५)	✗	(५)	१८
(६)	✓	(६)	१४
(७)	✗	(७)	२०
(८)	✓	(८)	११
(९)	✗	(९)	२४
(१०)	✓	(१०)	१७

પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ	+	પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ	=	કુલ ગુણ

રિમાર્ક ____________ તપાસનારની સહી ____________

1) जीव चींटी का हो या हाथी का, मानव का हो या दानव का .. नारकी का हो या तिर्यंच का .. जीव मात्र का जीवत्व अनमोल है। क्योंकि जीवत्व यह सिद्धत्व की खान है। ये जीवत्व के धारक जीवों के प्रति जाने-अनजाने अन्याय न हो जाय उनके प्रति बेदरकारी, द्वेष, दुर्भाव न हो जाय इसके लिए साधक को सावधान रहना है। और इसके लिए साधक के पास जीव-विचार का ज्ञान होना अति आवश्यक है।

नवकार मंत्र

2) नवकार मंत्र सभी संपत्ति को प्राप्त कराने वाला, सभी दुःख कष्टों को दूर करने वाला चौदह पूर्व का सारभूत नवकार मंत्र मोक्ष तक की सभी सुखों की प्राप्ति देने वाला है।

नवकार मंत्र का एक अक्षर सात सागरोपम के पाप को, एक पद पचास हजार सागरोपम के पाप को तथा पूर्ण नवकार यानि नवपद पांचसो सागरोपम के पापों का नाश करता है।

इस भव में भी इच्छित को देने वाला ऐसा चिंतामणीरत्न, कल्पवृक्ष, कामधेनु, कामघट आदि से अरिहंत पद और सिद्धपद के साथ शाश्वत सुख को देने वाला श्री नवकार मंत्र महान है। नवकार मंत्र समान तीन लोक में कोई महान मंत्र नहीं।

वंश स्थापना

3) श्री ऋषभदेव के जन्मे एक वर्ष के हुए तब प्रभु के वंश की स्थापना करना ऐसा इन्द्र का आचार है सोचकर खाली हाथ प्रभु के पास नहीं जाते इसलिए गन्ना लेकर इन्द्र नाभिकुलकर की गोद में बैठे हुए प्रभु के पास आये। तब गन्ना देखकर उसे लेने के लिए बालक प्रभु ने हाथ लंबाया। तब 'आप गन्ना खाओगे' कहकर इन्द्र ने प्रभु के हाथ में गन्ना दिया। प्रभु को इक्षु का अभिलाष हुआ अतः प्रभु का वंश इक्ष्वाकु नामक हो ऐसा कहकर इंद्र ने वंश की स्थापना की।

नव तत्त्व

4) अरिहंत परमात्मा के उपदेश का सार "नव तत्त्व है। जहाँ जहाँ जब जब अरिहंत प्रभु देशना देते हैं, उस उपदेश में नव तत्त्व में से कोई न कोई तत्त्व होता है। नव तत्त्व के बिना देशना नहीं और इस नव तत्त्व को जानकर उस पर श्रद्धा आ गई तो अपना बेड़ा पार, नव तत्त्व उपर श्रद्धा यही सम्यग्-दर्शन है। मोक्ष मार्ग की नींव है।

धान्य राशी

5) यह धरती अनेक प्रकार के धान्य से भरी है। यदि सब धान्य इकट्ठा करके उसमें मुट्ठीभर सरसव मिलाकर अत्यंत एक बुढ़ी माँ को कहा जाये कि इसमें से सरसव के दाने चुनकर निकाल दो। माजी को सफलता मिलेगी क्या?

देवाधिदेव श्री जिनेश्वर भगवंत कहते हैं कि कदाचित सरसव के दाने अलग किये जाते हैं,